मृगतृष्णा

हमीं ने रची है,
हमीं उससे उबरें

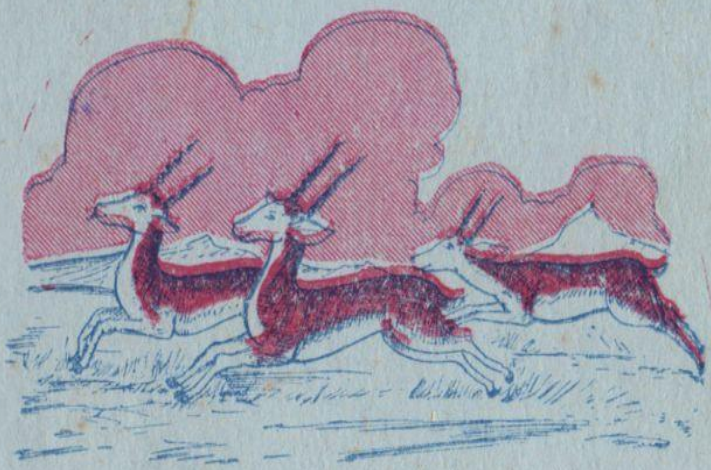

- श्रीराम शर्मा आचार्य

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

BRAHMVARCHAS SHODH SANSTHAN
SHANTIKUNJ, HARIDWAR, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मृगतृष्णा हमीं ने रची है, हमीं उससे उबरें

दरिद्रता की शिकायत किसी प्राणी को नहीं, निर्वाह के उपयुक्त साधन सामग्री उन्हें अपने चारों ओर पर्याप्त मात्रा में पड़ी दीखती है। साथियों से विद्वेष की उन्हें कोई शिकायत नहीं। सभी हिलमिल कर रहते हैं। मृगों से लेकर हाथियों तक—गौरैया से लेकर हंसों तक—चींटी से लेकर मधु-मक्खी तक सभी को मण्डली बनाकर सहयोग पूर्वक रहते देखते हैं। अपवाद तो कभी-कभी कहीं-कहीं ही दीखते हैं। जब सर्वत्र सन्तोष और शान्ति का वातावरण है, भगवान का अनुदान सभी पर बरसा हो तो अकेला मनुष्य ही क्यों ऐसा अभागा रह गया जिसे उतना समुन्नत शरीर—इतना सुविकसित मस्तिष्क इतना समृद्ध वातावरण उपलब्ध होते हुए भी चैन का नाम नहीं, सन्तोष दुर्लभ और हर समय खीजते-कलपते रहने की मनः स्थिति।

अवश्य ही यहाँ कोई ऐसा गतिरोध अड़ गया है जिसने आनन्द लूटने और प्रगति के उच्च शिखर तक चढ़ दौड़ने की समस्त सम्भावनाओं को ही कुंठित करके रख दिया। मनुष्य के सामने महती समस्या यही है यदि इसका समाधान बन पड़े तो समझना चाहिए दुर्भाग्य से छुटकारा मिला और सौभाग्य अनायास ही आकाश से टूट पड़ा।

यह व्यक्तिगत जीवन की चर्चा हुई। इससे एक कदम आगे बढ़ते ही परिवार सामने आता है। परिवार के बीच सभी को आनन्द मनाने का अवसर मिलता है। पक्षी अपने घोसलों में अण्डे बच्चों समेत मोद मनाते हैं। मुर्गी अपने परिवार को साथ लिए फिरती है। चींटी अपनी सन्तान को लिये लिये फिरती है। बिल्ली से लेकर कुत्ती तक के बच्चे अपनी माताओं की पीठ चढ़ मोद मनाते हैं। माता जिस भी परिस्थिति में है उन्हें दुलार से नहा देती है। बालकों को भी कोई शिकायत नहीं। एक मनुष्य है जिसके घर में स्वार्थों की खींचतान आरम्भ से लेकर अन्त तक चलती रहती है। सभी अपनी-अपनी गोद हरी करना चाहते हैं। बाहर से देखने में भेड़ों के बड़े सरायों, जेलखानों मुसाफिर खानों की तरह एक घर में रहते अवश्य हैं और लोकाचार भी किसी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कदर पालते हैं, पर जिस सघन आत्मीयता के लिए प्राणी तरसता और घर परिवार बसाता है उसका कहीं नाम निशान नहीं दीखता। बुढ़ापे का सहारा किसी को मानना इनदिनों शेख चिल्ली के सपनों से कम नहीं रह गया है। पिण्ड मिलने, वंश चलने जैसी मूढ़ मान्यताओं को उपहासास्पद भी ठहराया जा सकता है पर बनता इतना तक नहीं कि उन्हें स्वावलम्बी सुसंस्कारी बन सकने तक का अनिवार्य उद्देश्य सध सके।

चन्दन अपने समीपवर्ती पौधों को सुगन्धित बना देता है, माली का उद्यान फल-फूलों से लदा दीखता है किसान जिन खेतों में मेहनत करता है उसके बदले में अनाज के कोठे भर लेता है, गड़रिया जिन्हें पालता है उनकी सख्या और स्थिति बढ़ाता है। दूध, ऊन, और बच्चों के सहारे अपने श्रम का प्रतिफल पाता है। यह बात देखने योग्य है कि परिवार पालने वाले इतना अधिक त्याग और श्रम करने के उपरान्त भी अनीति संचय उड़ेलते रहने पर भी आखिर पाते क्याहैं? उनके उस खेत से क्या फसल उगी और उससे किसका हित सधा यह विचारने ही योग्य है। इस तथ्य पर आरम्भ से अन्त तक विचार किया जाना चाहिए कि मनुष्य अपने लिए—परिवार के लिए—करता तो बहुत कुछ है पर दोनों ही क्षेत्रों में उसे घोर असफलता हाथ लगती है। आखिर इस श्रम की निरर्थकता का कोई तो कारण होना ही चाहिए।

ऐसे लोग कम नहीं जो शादियों में हजारों लाखों की सम्पत्ति फुलझड़ी की तरह देखते देखते धुआँ उड़ा देते हैं। ऐसों की कमी नहीं जो तीर्थयात्रा, ब्रह्मभोज और देव पूजन और चींटी के बिलों पर आटा डालते और अपने को पुण्यात्मा सिद्ध करने का प्रयास करते रहते हैं। कौन जाने उन्हें उसमें कितनी सफलता मिली होगी। जिन पण्डों ने जेबकाटी वे उस 'धर्म' धुरीण' यजमान को काठ का उल्लू से अधिक और कुछ समझ रहे होंगे या नहीं। जिन चींटियों के बिलों पर आटा डाला गया था उन्हें दूसरे ही क्षण कुत्ता उदरस्थ कर गिया होगा तो वे बेचारी क्या कहती होंगी? उन्हें पुण्य प्रदर्शन के ढिंढोरचियों को शादी में दौलत उड़ाने वालों का ससुर और जमाता भविष्य में इन धन कुबेरों से और भी न जाने कितना पाने की आशा लगाने लगे होंगे और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

न मिलने पर उस वधू को मार कर दूसरी शादी करने पर इतना ही धन और कमाने की योजना बना रहे होंगे ।

मनुष्य की बुद्धिमानी में कोई शक नहीं, पर उसकी मूर्खता भी ऐसी है जिस पर हँसते-हँसते लौट पोट हो जाने या आँखों से आँसू बहाते हुए हिलकी भर कर फूट पड़ने को मन करता है । बुद्धिमानी और मूर्खता का इतना विचित्र संयोग देखकर कभी तो उसके सृजेता से लड़ पड़ने को जी करता है और कभी मन आता है कि इन विडम्बनाओं, विपन्नताओं में बेतरह उलझे हुए अभागों को छाती से चिपटा कर फफक-फफक कर रो लिया जाय । उसका न सही अपना तो मन हलका कर ही लिया जाय । दुर्मति जन्य दुर्गति का अभिशाप जैसा मनुष्य के हिस्से में आया, कदाचित ही सृष्टा की इस सृष्टि में अन्य किसी को संत्रस्त कर रहा हो ।

आखिर यह सब है क्या ? मनुष्य जीवन सृष्टा का सर्वोपरि उपहार है । उसे भव बन्धनों से मुक्त होने,आत्म कल्याणके चरम लक्ष्य तक जा पहुँचने, सदुपयोग कर सकने पर भी ऊँची पदोन्नति पाकर ऋषि, देवता,अवतार बनने जैसी अगणित सम्भावनाओं से भरा-पूरा यह उपहार क्या इसलिए दियाथा कि उसे अभिशाप की तरह वहन करना पड़े । सृष्टा ने अपेक्षा रखी है कि उसका राजकुमार हाथ बँटायेगा और अपने विवेक से इस उद्यान को अधिक सुरम्य बनाने में सहयोग देगा । पर यह क्यों, वह तो स्वयं ही ऐसे दलदल में फँस गया है । जिससे उवरने में उसका अपना पुरुषार्थ काम नहीं दे रहा ।

असफलताओं और असमंजसों से घिरा, बिडम्बनाओं से उलझा समय और संकटों से जकड़ा—दलदल में पैर से सिर तक धँसा—यह कैसा जीवन जिसमें न सन्तोष, न चैन, न उत्साह, न आशा, न भविष्य । निश्चय ही कहीं कोई बड़ी भूल हो गई है । लगता है वह है ऐसी जो मूर्खता होते हुए भी बुद्धिमत्ता दीखती है । विष तुल्य होते हुए भी अमृत जैसी मीठी लगती है । समझने में आती नहीं, न छूटती है, न हटती है. न उसे छोड़ने की इच्छा ही होती है । सम्भवतः इसी को मोह मयी मदिरा और माया की मृग तृष्णा कहा गया है । सम्भवतः यही भ्रम ग्रस्तता है जिसके लिए कस्तूरीके हिरन भटकते

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

रहते हैं। यही वह मृग तृष्णा है जो प्यासे मृगों को ललचाती दौड़ाती थकाती और बेमौत मारती है।

चासनी पर बेहिसाब टूट पड़ने वाली मक्खी अपने पंख फँसाती और प्राण गँवाती हैं। आटे की गोली के प्रलोभन में मछली और जाल के दानों पर टूट पड़ने वाली चिड़िया की अदूरदर्शिता हर किसी को अखरती है, पर उस व्यामोह को क्या कहा जाय ? जो दुर्मति के सहारे दुर्गति कराने वाले अभिशाप के रूप में जन-जन के ऊपर लदा पड़ा है। इस सुयोग का जो लाभ मिलना चाहिए उनमें से तो एक भी मिल नहीं पाता, उलटे ऐसे संकटों का दुर्भाग्य सहना पड़ता है जितना कदाचित ही इस सृष्टि के अन्य किसी प्राणी के ऊपर लदता हो। अन्य प्राणी अपने संचित कर्मों का फल भोगकर निवृत्त हो जाते हैं किन्तु मनुष्य है जो त्राण पाने की अपेक्षा जन्म जन्मान्तरों तक भुगते जाने वाले पाप कर्मों का पोटला बोझिल करता चला जाता है।

बुद्धिमानोंद्वारा इस मूर्खता का कारण प्राचीन कालमें 'माया' के नाम से जाना और कहा जाता रहा है और उससे विरत होने वाले को लोक-परलोक से असीम आनन्द मिलने का प्रतिपादन अपने ढंग से किया जाता रहा है। अब परिभाषाएँ बदल गई हैं। 'माया' शब्द का उपयोग किये बिना भी कहा जा सकता है। उसमें दृष्टिकोण में समाविष्ट भ्रान्ति व्यवहार अव्यवस्था और निर्धारण में अदूरदर्शिता का समावेश कहा जाय तो भी हर्ज नहीं। मानवी गरिमा को अक्षुण्य रखने वाले सिद्धान्तों, आदर्शों और विधानों तथा आज के प्रचलनों के बीच जमीन आसमान जैसी खाई बन गई है। पहले यह अन्तर कम था। तब मनुष्य उतना ही प्रसन्न और सन्तुष्ट था। आज परिस्थितियों में जटिलता आ गई है। उसके अनुरूप दृष्टिकोण को अपेक्षाकृत अधिक उदात्त और परिमार्जित होना चाहिए था। इसके स्थान पर हुआ ठीक उलटा है। समाज में सम्पन्नता अर्जित करने और उसे उद्धत प्रयोजनों में उड़ाने की प्रथा चल पड़ी है। इसके निमित्त मनुष्य को अधिक संकीर्ण, निष्ठुर, अनैतिक एवं आक्रमक बनना पड़ा है। संक्षेप में यह है आज का प्रचलन।

यदि सामयिक समस्याओं का तात्कालिक हल निकालना ही अभीष्ट

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हो तो उसी प्रचलित नीति को अपनाये रहा जा सकता है जिससे मच्छरों, मक्खियों को पकड़ने और चेचक की हर फुंसी पर अलग-अलग मरहम पट्टी करने की विडम्बना प्रचलित है। यदि अत्यन्तिक और चिरस्थायी समाधान खोजना हो तो उसका उपाय एक ही है कि दृष्टिकोण, व्यवहार, स्वभाव एवं निर्धारण का पुनर्निरीक्षण किया जाय। नाली साफ करके सड़ी कीचड़ बुहार देने से ही मक्खी मच्छरों दुर्गन्ध और कृमियोंसे छुटकारा मिलेगा। रक्त शोधन के उपचार से ही फुंसियों से पीछा छूटेगा। मनुष्य का आज का चिन्तन और स्वभाव ही गड़बड़ा गया और उसे भटकाव ने ग्रस लिया है कि सुखी सन्तुष्ट एवं समुन्नत जीवनयापन के लिए क्या सोचना और क्या करना चाहिए। यह बन ही नहीं पड़ता। प्रचलित ढर्रे में किस प्रकार, कितना, क्या हेर-फेर करना चाहिए। इतना बन पड़े तो समझना चाहिए कि जन-जन के सम्मुख उपस्थित समस्याओं और विभीषिकाओं में से अधिकांश का—अधिकांश समाधान मिल गया है और संकट का घटाटोप अनुकूल हवा बहते ही उड़ गया।

अध्यात्म विज्ञान व्यक्ति के विकास समुन्नत जीवन के लिए उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि सुविधा साधन अर्जित करने के लिए भौतिक विज्ञान। सुविधा सामग्री श्रम और साधनों के सहारे उपलब्ध होती है। व्यक्तियों और परिस्थितियों के साथ तालमेल बिठा सकने में समर्थ व्यक्तित्व का निर्माण अध्यात्म विज्ञान के सुनिश्चित फार्मूलों के आधार पर ही सम्भव होता है। परिष्कृत व्यक्तित्व ही अपनी सुव्यवस्था बना सकता है और उसी के लिए यह सभव है कि स्वास्थ, सन्तुलन, सम्मान, वैभव को सन्तोष जनक मात्रा में अर्जित कर सके।

पदार्थ विज्ञान प्रत्यक्ष है। उसके सहारे अभीष्ट प्रतिफल हाथों हाथ पाया कमाया जा सकता है। ठीक इसी प्रकार अध्यात्म विज्ञान भी ऐसा सुनिश्चित विधान है जिसके आधार पर अपने दृष्टिकोण, व्यवहार, स्वभाव, निर्धारण को परिष्कृत किया जाता है। प्रस्तुत ढर्रे को दूरदर्शी विवेकशीलता के आधार पर पर्यवेक्षण कर सकना बन पड़े और जो उचित है उसी को अपनाने—अभ्यास में उतारने का साहस जुट सके तो समझना चाहिए कि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

समस्याओं का कुहासा छँट गया। तमिस्रा ही डरावनी होती है। उसी में ठोकरें लगने का भय रहता है। निशाचर की दाल भी उसी आवरण के पीछे गलती है। आलस्य भी उन्हीं घड़ियों में चढ़ता है और नींद की गोद में भी उसी महौल में सब लोग चले जाते हैं। उत्पादन होता नहीं। न कुछ सूझता है न बन पड़ता है। सभी लोग बिस्तरों में मुँह छिपाये पड़े होते हैं और खरीद करते दीखते हैं। यह दुर्गति तमिस्राजन्य है। इसे हटाने के लिए जन-जन को झक-झोरने और दरबाजे--दरबाजे को खटखटाने का प्रयोजन पूरा कर सकना कठिन है। प्रकाश उगने से ही यह सारी समस्याएँ हल होती हैं।

अध्यात्म वह प्रकाश है जिसे अपनाने पर मनुष्य को प्रचलित ढर्रे के दलदल से उबरने की आवश्यकता प्रतीत होती है। साथ ही उन भ्रान्तियों, आदतों को बदलने की इच्छा होती है जो वस्तुतः इस सारी विपत्ति की जन्म-दात्री है जिसमें आज जन-जन को फँसा पाया जा सकता है। विपत्तियां कहीं से उतरती नहीं हैं, समस्याएँ ऊपर से टूटती नहीं हैं। वे मनुष्य की अपनी बोई उगाई या न्योत बुलाई हुई होती हैं। जाला मकड़ी बुनती है और उसमें स्वय उलझ कर विलाप करती और बेमौत मरती है। जब उसे यथार्थता का बोझ होता है तो ढर्रा बदलती है। नये सिरे से सोचती और नई रीति-नीति अपनाती है। इतने मात्र से सारा महौल बदल जाता है। जाल को वह उसी मुँह से समेटती निगलती चली जाती है जिसके माध्यम से कि उसे निकाला और फैलाया गया था। जाले का कच्चा मसाला मकड़ी के पेट से निकलता है और फिर ढर्रा बदलते ही उसी पेट में चला जाता है जिसमें से कि वह निसृत हुआ था। मनुष्य भी एक प्रकार की मकड़ी है। अपने दृष्टि-कोण में अवांछनीयताओं का समावेश करके उन संकटों का सृजन करता है। जिनने उन्हें बेतरह खिन्न, विपन्न कर रखा है और तोड़-मरोड़कर रख दिया है।

परित्राण पाने के लिए दूसरों की ओर तकना व्यर्थ है। हम मुँह से भोजन करते और पेट से पचाते हैं। नित्य ही नहाते, मल-मूत्र त्यागते, सोते, पढ़ते, व्यवसाय रत होते और बच्चे जनते हैं। यह कार्य औरों से नहीं कराये जा सके। अपना उद्धार आप करने का गीता का परामर्श, नितान्त सही सार्थक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

है । यदि कोई आत्म निरीक्षण, आत्म सुधार, आत्म निर्माण, आत्म परिष्कार के लिए सच्चे मन से सहमत हो, उसकी आवश्यकता अनुभव करे और उस परिवर्तन के लिए साहस सँजोये तो कोई कारण नहीं कि भौतिक विज्ञान की तरह ही आत्म विज्ञान के चमत्कार भी हाथों हाथ न देखे जा सकें । खोया स्वास्थ्य वापस लौटाने की, उद्विग्न मनःक्षेत्र में उल्लास भरने की, अर्थ संकट से उबरने की, शत्रुता को मित्रता में बदलने की और निराशा के वातावरण में—उज्ज्वल भविष्य की आशा किरणें देखने की पूरी-पूरी गुंजायश है । जहाँ इतना आत्म परिशोधन, आत्म परिष्कार का क्रम चलेगा वहाँ यह भी बने बिना रहेगा नहीं कि जिस परिवार में सर्वत्र कुसंस्कारिता, आपाधापी, खींच तान अशिष्टता और असहकारिता भरी दीखती है उसमें आमूल चूल परिवर्तन के दृश्य न दीखने लगें ।

स्मरण रखने योग्य तथ्य एक ही है कि अध्यात्म जादूगरी नहीं है । उसके द्वारा किसी देवी देवता का अनुदान सिद्ध पुरुष का वरदान या मन्त्र तन्त्र का चमत्कार बरसने की दुराशा में जहाँ-तहाँ नहीं भटकते फिरना चाहिए । यह विशुद्ध आत्म निर्माण की विद्या है । इसके कुछ सिद्धान्त और निर्धारण हैं। जो उन्हें अपनाते हैं वे उबरते हैं और अपने साथ-साथ सम्बन्धियों समेत समूचे समाज समुदाय को उबारते हैं ।

यही है वह आत्म विज्ञान जिसकी प्रत्यक्ष परिणति का रसास्वादन कराने के लिए शान्तिकुंज को एक समर्थ विद्यालय—गायत्री तीर्थ के रूपमें विकसित किया गया है । त्रिवेणी स्नान का प्रतिफल रामायण में 'काक होहि पिक बकहु मराला ।" का अलंकारिक उल्लेख किया गया है । त्रिपदा गायत्री की तीन धाराएँ समझ दारी, जिम्मेदारी, ईमानदारी के रूप में किस प्रकार जीवन चर्या में समाविष्ट की जा सकती हैं इसी की अनुभूति का प्रशिक्षण कल्प साधना सत्रों में कराया जाता है । इस कल्प वृक्ष उद्यान में जो प्रवेश करते हैं उन्हें इस अध्यात्म विज्ञान की जानकारी, प्रेरणा एवं विद्या हस्तगत होती है जिसके आधार पर शेष जीवन को सुखी, समृद्ध, सम्मानित, सुसंस्कारी और आदर्श अनुकरणीय स्तर का बनाया जा सके ।

क्र० ८७ प्र०-युग निर्माण योजना, मु०—युग निर्माण प्रेस मथुरा, मूल्य ४० पैसे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org